डॉ. जयवीर त्यागी
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667 (उत्तराखंड)

निदेशक की कलम से.....

आपको यह अवगत कराते हुए मुझे अपार प्रसन्नता एवं गौरव की अनुभूति हो रही है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की इस वर्ष भी हिंदी दिवस के गरिमामय अवसर पर राजभाषा हिंदी से जुड़े अन्य कार्यक्रमों के आयोजनों के साथ–साथ विगत 27 वर्षों से निरंतर प्रकाशित हो रही अपनी वार्षिक गृह पत्रिका "प्रवाहिनी" का प्रकाशन करने जा रहा है। जैसा कि हम सभी जानते हैं, आज भारत ही नहीं अपितु विश्व के लगभग सभी देश वैश्विक महामारी कोरोना के कहर से त्रस्त एवं भयभीत हैं। भारत सरकार द्वारा जारी सोशल डिस्टेंसिंग संबंधी दिशा–निर्देशों को अपनाते हुए सभी सरकारी कामकाज पूर्व की भांति ही निपटाए जा रहे हैं और कहीं न कहीं हम सभी भय एवं आशंकाओं के वातावरण में जी कर भी सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। सरकार ने इस वैश्विक महामारी के संक्रमण की रोकथाम और उपचारात्मक उपायों को कार्यान्वित करने की दिशा में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ी है, हर स्तर पर जोरदार एवं सराहनीय प्रयास किए जा रहे हैं।

भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुपालन में इस बार हम सोशल डिस्टेंसिंग की संकल्पना को दृष्टिगत रखते हुए हिंदी दिवस समारोह से जुड़े कार्यक्रमों को थोड़ा संक्षिप्त रूप देकर इसे और भी आकर्षक ढंग से मना रहे हैं। प्रयास किए जा रहे हैं कि अधिक से अधिक कार्यक्रम ऑनलाईन माध्यम से आयोजित किए जाएं। प्रस्तुत पत्रिका में संस्थान के ही नहीं अपितु विभागेत्तर रचनाकारों के लेखों को भी प्रकाशित किया जा रहा है। रचनाओं की भाषा सरल व सहज रखने का प्रयास किया गया है ताकि हर वर्ग का पाठक इससे लाभान्वित हो सके। उम्मीद है कि यह अंक समस्त प्रबुद्ध पाठकों को रोचक एवं उपयोगी लगेगा।

संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिंदी में अपनी रचनाएं देकर राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति अपनी रूचि एवं समर्पण को प्रदर्शित किया है। हमारा संस्थान अपने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शोध में अग्रणी भूमिका निभाने के साथ–साथ राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी निरंतर अग्रसर रहा है। संविधान के अनुच्छेद 343 के अंतर्गत देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। अतः हमारा दायित्व है कि संघ की राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु राजभाषा विभाग जो भी आदेश जारी करे उनका समुचित ढंग से पालन किया जाए।

यह प्रसन्नता की बात है कि संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी लेखन रूचि में निरंतर वृद्धि हो रही है और वे न केवल प्रशासनिक कार्यों में अपितु तकनीकी एवं वैज्ञानिक प्रकृति के कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का समुचित प्रयोग कर रहे हैं। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करना चाहूंगा कि वे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में बढ़–चढ़कर योगदान दें ताकि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी यूं ही फलती–फूलती रहे।

इस पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन कार्यों से जुड़े सभी पदाधिकारी तथा विद्वत लेखक धन्यवाद के पात्र हैं । मैं पत्रिका की अपार सफलता एवं श्रीवृद्धि की मंगल कामना करता हूं ।

(जयवीर त्यागी)